

अध्ययन सामग्री  
 बी.ए. (संस्कृत) पार्ट 3  
 प्रश्नपत्र - सप्तम  
 डॉ० मालविका तिवारी  
 सहायक प्राचार्य  
 संस्कृत विभाग  
 एच.डी. जैन कॉलेज  
 आरा (बी.कुं.सिं.वि०)

### वसन्ततिलका

वसन्ततिलका दन्द् का लक्षण —

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जर्गो जः ।

जिसके प्रत्येक चरण में एक त्वाण, एक भजाण, दो जजाण और अन्त में दो गुरु हों, उसे 'वसन्ततिलका' दन्द् कहते हैं। 'वसन्ततिलका' के प्रत्येक चरण में 14 अक्षर होते हैं।

उदाहरण —

ॡ ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ ॡ
उक्ता व	सन्त ति	लका त	भजा ज	जो जः
~~~~~	~~~~~	~~~~~	~~~~~	
त्वाण	भजाण	जजाण	जजाण	गुरु गुरु

अन्य उदाहरण —

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्  
 भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः ।  
 इत्थं विचिन्तयति कौशगतो बिरिषे ।  
 हा हन्त ! हन्त ! नलिनीं जज उज्जहार ॥

ॡ ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ ॡ
रात्रिर्ग	मिष्यति	भविष्य	तिसुप्र	भा तम्
~~~~~	~~~~~	~~~~~	~~~~~	
त्वाण	भजाण	जजाण	जजाण	गुरु गुरु

ॡ ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ ॡ
भास्वानु	देष्यति	हसिष्य	तिपङ्क	जश्रीः
~~~~~	~~~~~	~~~~~	~~~~~	
त्वाण	भजाण	जजाण	जजाण	गुरु गुरु

ॐ ॐ ॐ  
इत्थं वि  
तगण

ॐ ॐ ॐ  
चिन्तय  
भगण

ॐ ॐ ॐ  
त्रिकोश  
जगण

ॐ ॐ ॐ  
जन्तु द्वि  
जगण

ॐ ॐ  
गुरु गुरु

ॐ ॐ ॐ  
हा हन्त  
तगण

ॐ ॐ ॐ  
हन्त न  
भगण

ॐ ॐ ॐ  
लिनीं  
जगण

ॐ ॐ ॐ  
ज उ ज  
जगण

ॐ ॐ  
हा हा

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरु हैं। अतः यह 'वसन्ततिलका' छन्द है।

## शिवरिणी

शिवरिणी छन्द का लक्षण —

रसैः रुद्रैश्चिदन्ना यमनसभलाः शिवरिणी

जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक चगण, एक भगण, एक भगण, एक सगण, एक भगण तथा अन्त में एक लघु, एक गुरु हैं तथा 6 शब्द ॥ अक्षरों के बाद यति हो उसे 'शिवरिणी' छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं।

उदाहरण —

ॐ ॐ ॐ  
रसैः रु  
चगण

ॐ ॐ ॐ  
द्रैश्चिदन्ना  
भगण

ॐ ॐ ॐ  
यमन  
भगण

ॐ ॐ ॐ  
सभला  
सगण

ॐ ॐ ॐ  
गः शिव  
भगण

ॐ ॐ  
रि नी  
लघु गुरु

अन्य उदाहरण -

पृथिव्यां पुत्रास्तै जननि बहवः सन्ति सरलाः  
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।  
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे  
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥

१ ॡ ॡ पृथिव्यां यगण	ॡ ॡ ॡ पुत्रास्तै मगण	१ १ १ जननि नगण	१ १ ॡ बहवः सगण	ॡ १ १ सन्ति स भगण	१ ॡ रलाः लघु गुरु
१ ॡ ॡ परं तै यगण	ॡ ॡ ॡ षांमध्ये मगण	१ १ १ विरल नगण	१ १ ॡ तरला सगण	ॡ १ १ ऽहं तव भगण	१ ॡ सुतः लघु गुरु
१ ॡ ॡ मदीयो यगण	ॡ ॡ ॡ ऽयं त्यागः मगण	१ १ १ समुचि नगण	१ १ ॡ तमिदं सगण	ॡ १ १ नो तव भगण	१ ॡ शिवे लघु गुरु
१ ॡ ॡ कुपुत्रो यगण	ॡ ॡ ॡ जायेत मगण	१ १ १ क्वचिद नगण	१ १ ॡ पिकमा सगण	ॡ १ १ तानभ भगण	१ ॡ व नि लघु गुरु

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण तथा अन्त में एक लघु, एक गुरु है। अतः इसे शिखरिणी चन्द कहेंगे।

## मन्दाक्रान्ता

मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण —

मन्दाक्रान्ताग्नुपिरसनर्गो भर्त्ता तौ जुयुमम्

जिसके प्रत्येक चरण में एक मजण, एक भजण, एक नजण, दो तजण तथा अन्त में दो गुरु अक्षर हैं, चार अक्षरों के बाद, फिर दस अक्षरों के बाद और फिर सात अक्षरों के बाद यति है उसे 'मन्दाक्रान्ता' छन्द कहते हैं।  
 इस छन्द के प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं।

उदाहरण —

$\frac{S \quad S \quad S}{\text{मन्दाक्रा}}$ मजण	$\frac{S \quad   \quad  }{\text{न्ताग्नुधि}}$ भजण	$\frac{  \quad   \quad  }{\text{रसन}}$ नजण	$\frac{S \quad S \quad  }{\text{जर्गोभ}}$ तजण	$\frac{S \quad S \quad  }{\text{र्ता तौ ज}}$ तजण	$\frac{S \quad S}{\text{यु मम्}}$ गुरु गुरु
-----------------------------------------------------	------------------------------------------------------	-----------------------------------------------	--------------------------------------------------	-----------------------------------------------------	------------------------------------------------

अन्य उदाहरण —

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्  
 विश्वाधारं गजानसदृशं मैत्रवर्णं शुभाङ्गम् ।  
 लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं यौगिभि र्घ्यानं गम्भं  
 वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् ॥

$\frac{S \quad S \quad S}{\text{शान्ताका}}$ मजण	$\frac{S \quad   \quad  }{\text{रं भुज}}$ भजण	$\frac{  \quad   \quad  }{\text{गशय}}$ नजण	$\frac{S \quad S \quad  }{\text{नपद्म}}$ तजण	$\frac{S \quad S \quad  }{\text{नाभस}}$ तजण	$\frac{S \quad S}{\text{रेशम्}}$ गुरु गुरु
----------------------------------------------------	--------------------------------------------------	-----------------------------------------------	-------------------------------------------------	------------------------------------------------	-----------------------------------------------

$\frac{S \quad S \quad S}{\text{विश्वाधा}}$ मजण	$\frac{S \quad   \quad  }{\text{रं गज}}$ भजण	$\frac{  \quad   \quad  }{\text{नसदृ}}$ नजण	$\frac{S \quad S \quad  }{\text{शमघ}}$ तजण	$\frac{S \quad S \quad  }{\text{वर्णशु}}$ तजण	$\frac{S \quad S}{\text{भाङ्गं गम्}}$ गुरु गुरु
----------------------------------------------------	-------------------------------------------------	------------------------------------------------	-----------------------------------------------	--------------------------------------------------	----------------------------------------------------

$\frac{S \quad S \quad S}{\text{लक्ष्मीका}}$ मजण	$\frac{S \quad   \quad  }{\text{न्तकम}}$ भजण	$\frac{  \quad   \quad  }{\text{लनय}}$ नजण	$\frac{S \quad S \quad  }{\text{नयौगि}}$ तजण	$\frac{S \quad S \quad  }{\text{भि र्घ्यानं}}$ तजण	$\frac{S \quad S}{\text{गं यम्}}$ गुरु गुरु
-----------------------------------------------------	-------------------------------------------------	-----------------------------------------------	-------------------------------------------------	-------------------------------------------------------	------------------------------------------------

$\begin{matrix} S & S & S \\ \text{वन्} & \text{य} & \text{वि} \\ \hline \text{मगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & | & | \\ \text{ज्जं} & \text{भव} & \\ \hline \text{भगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} | & | & | \\ \text{भय} & \text{ह} & \\ \hline \text{नगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S & | \\ \text{रं} & \text{सन्} & \\ \hline \text{तगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S & | \\ \text{लोक} & \text{क} & \\ \hline \text{तगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S \\ \text{ना} & \text{थम्} \\ \hline \text{गुरु} & \text{गुरु} \end{matrix}$

अन्य उदाहरण -

आशानन्धः कुसुमसदृशः प्रायशौ ह्यंगनानाम्  
 सन्धः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोजे रुणद्धि ।

$\begin{matrix} S & S & S \\ \text{आशा} & \text{न} & \text{न्ध} \\ \hline \text{मगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & | & | \\ \text{न्धः} & \text{कुसु} & \\ \hline \text{भगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} | & | & | \\ \text{मसदृ} & & \\ \hline \text{नगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S & | \\ \text{शः} & \text{प्राय} & \\ \hline \text{तगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S & | \\ \text{शौ} & \text{ह्यंग} & \\ \hline \text{तगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S \\ \text{ना} & \text{नाम्} \\ \hline \text{गुरु} & \text{गुरु} \end{matrix}$

$\begin{matrix} S & S & S \\ \text{सन्धः} & \text{पा} & \\ \hline \text{मगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & | & | \\ \text{निप्र} & \text{ण} & \\ \hline \text{भगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} | & | & | \\ \text{यिहृद} & & \\ \hline \text{नगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S & | \\ \text{यविप्र} & & \\ \hline \text{तगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S & | \\ \text{योजरु} & & \\ \hline \text{तगण} \end{matrix}$ 
 $\begin{matrix} S & S \\ \text{ण} & \text{द्धि} \\ \hline \text{गुरु} & \text{गुरु} \end{matrix}$

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण और अन्त में दो गुरु हैं। अतः इसे 'मन्दाक्रान्ता' ध्वन्द्व कहेंगे।